नवम्बर 2023 वर्ष 2, अंक 10
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.– मासिक समाचार

"वास्तविक शिक्षा मनुष्य की गरिमा को बढ़ाती है और उसके आत्म–सम्मान को बढ़ाती है। यदि शिक्षा की वास्तविक भावना को प्रत्येक व्यक्ति द्वारा महसूस किया जा सके और मानव गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ाया जा सके, तो दुनिया रहने के लिए बहुत बेहतर जगह होगी।"

— डॉ० ए पी जे अब्दुल कलाम

खंड

खंड क : डी.ई.आई. 3
खंड ख : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा 7
खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI) 11

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. डी.ई.आई में नाट्य महोत्सव के माध्यम से एक स्मरणीय आयोजन 3
2. डी.ई.आई. में नवाचार, गुणवत्ता और मूल्यांकन दिवस समारोह 4
3. कौमी एकता सप्ताह का आयोजन 5
4. संकाय समाचार 5
   समाज विज्ञान संकाय 5
   छात्रोप्लब्धियाँ: 5
5. विद्यालय समाचार 5
   छात्रोप्लब्धियाँ: 5
   शिक्षकोप्लब्धि: 6

खंड ख: डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

6. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 7
7. सूचना केन्द्रों से समाचार 9
   आई सी जमशेदपुर की टीम ने टाटा कमिंस द्वारा आयोजित विनिर्माण दिवस प्रतियोगिता में भाग लिया और शीर्ष सम्मान अर्जित किया 9
   आई सी, जमशेदपुर: भविष्य के इंजीनियरों ने खुद को टाटा कमिंस वर्ल्ड में विसर्जित कर दिया... 9
   DEI केंद्रों पर नवाचार, गुणवत्ता और मूल्य दिवस समारोह 10

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (**AA DEIs & AAFDEI**)

8. संपादक की डेस्क से 11
9. दयालबाग़ एक प्रामाणिक शिक्षण संगठन के रूप में। 11
   सुमिता श्रीवास्तव प्रोफेसर, प्रबंधन विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, डी. ई. आई 11
10 पाठक की प्रतिक्रिया स्तम्भ 12
   प्रतिक्रिया 1 13
   प्रतिक्रिया 2 13
   प्रतिक्रिया 3 14
11. पूर्व छात्र बाइट्स 14
   प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड 14

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

डी.ई.आई. समाचार

डी.ई.आई में नाट्य महोत्सव के माध्यम से एक स्मरणीय आयोजन

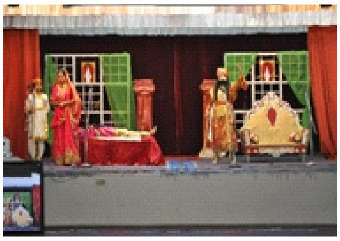

छात्रों के समग्र विकास में नाटक और अभिनय कलाओं से बहुत मदद मिलती है, जो उन्हें रचनात्मकता, मानसिक शारीरिक कौशल और प्रभावी संचार सहित महत्त्वपूर्ण क्षमताओं को विकसित करने में भी सहायता करते हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–5, उत्तर प्रदेश के कला संकाय के अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत विभाग संयुक्त रूप से वार्षिक नाट्य महोत्सव का आयोजन करते हैं। इस आयोजन में डी.ई.आई. के साथ–साथ आगरा जिले के कई स्कूल, कॉलेज और संकाय उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। प्रविष्टियाँ अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत भाषाओं में नाटकों के रूप में आमंत्रित की जाती हैं और प्रारंभिक स्क्रीनिंग स्तर के बाद तीनों भाषाओं में से प्रत्येक में अधिकतम दो नाटकों को अंतिम प्रतियोगिता और सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए चुना जाता है। इस वर्ष, वार्षिक नाट्य महोत्सव 3 और 4 नवंबर, 2023 को संस्थान के प्रतिष्ठित दीक्षान्त सभागार में आयोजित किया गया था। जिसमें पाँच नाटक, दो संस्कृत में, दो अंग्रेजी में और एक हिंदी में प्रदर्शित किए गए थे। संस्कृत भाषा में नाटक थे 'अष्टावक्र' (कला संकाय, डी.ई.आई.) और 'शकुंतलायाः पतिगृहगमनम्' (डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय), अंग्रेजी भाषा में 'द बिशप्स कैंडल्स' (शिक्षा संकाय, डी.ई.आई.) और 'डॉ. फॉस्टसः क्रिस्टोफर मार्लो के नाटक (कला संकाय) का एक रूपांतरण और हिंदी भाषा में 'दीपदान' (डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय)। इस अवसर पर निर्णायकों में थे विख्यात संस्कृत मनीषी डॉ. विजय श्रीवास्तव, प्राचार्य, आर.बी.एस. कॉलेज, आगरा, डॉ. शादान जाफरी, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा और श्री उमा शंकर मिश्रा, अभिनेता और निदेशक फिल्म थिएटर क्रिएशन ग्रुप, आगरा, संयोजक डॉ. सोनल सिंह, डॉ. दयालप्यारी सिन्हा और डॉ. निशीथ गौड़ संयुक्त रूप से रहे।

इस वर्ष, इस कार्यक्रम को बेहद विशेष और उच्च दर्जा दिया गया, इसे डी.ई.आई. परिवार के लिए सबसे आनन्द के अवसर का उत्सव माना गया क्योंकि संस्थान के तीन प्रोफेसरों को विश्व के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों में स्थान दिया गया था। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा हाल ही में प्रकाशित एक सूची में उनके संबंधित डोमेन (न्यूज़लेटर के पिछले संस्करण में विवरण साझा किए गए थे) तीन उल्लेखनीय व्यक्तित्व, प्रो. वी.बी. गुप्ता, डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के समन्वयक और पूर्व प्रमुख, टेक्सटाइल इंजीनियरिंग विभाग, आई.आई.टी. दिल्ली, प्रोफेसर सुखदेव रॉय, प्रमुख, भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय, डी.ई. आई., और प्रोफेसर डी.के. चतुर्वेदी, प्रमुख, फुटवियर प्रौद्योगिकी विभाग, इंजीनियरिंग संकाय इस कार्यक्रम के विशेष आमंत्रित सदस्य थे। दर्शकों के सामने उनका विधिवत् परिचय कराया गया, उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए उनकी सराहना की। परम श्रद्धेय प्रोफेसर पी.एस. सतसंगी साहब, अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति (दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के लिए एक प्रबुद्ध मंडल के रूप में कार्यरत एक गैर–वैधानिक निकाय), और परम आदरणीया रानी साहिबा ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति के साथ इस अवसर पर सभी उपलब्धियों और प्रदर्शन करने वालों को आशीर्वाद दिया और कामना की कि अपने भविष्य के प्रयासों में बड़ी उपलब्धि हासिल करेंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

डी.ई.आई. में नवाचार, गुणवत्ता और मूल्यांकन दिवस समारोह

डी.ई.आई. में दिवाली को एक वार्षिक कार्यक्रम के रूप में ''नवाचार, गुणवत्ता और मूल्य/मूल्यांकन दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष, 12 नवंबर, 2023 को, दिवाली के दिन, नवाचार और गुणवत्ता की भावना का जश्न मनाने के लिए डी.ई.आई. के छात्रों द्वारा एक विशिष्ट पैनल चर्चा और विशेष प्रदर्शन का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में 489±1 अध्ययन केंद्रों के विविध दर्शकों और ई–कैस्केड नेटवर्क के माध्यम से दुनिया भर से जुड़े लगभग 20,000 लोगों ने भाग लिया। उनकी उपस्थिति ने इस कार्यक्रम को समृद्ध बनाया, जिससे नवाचार और उत्कृष्टता द्वारा चिह्नित दिवाली का एक अनूठा उत्सव पेश किया गया।

पैनल चर्चा ''अभिनव संस्कृति, मूल मूल्य, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और मूल्यांकन'' विषय पर केंद्रित थी, जिसमें प्रतिष्ठित पैनलिस्ट प्रो. बड हॉल, विक्टोरिया विश्वविद्यालय, कनाडा, प्रो. प्रेम व्रत, नॉर्थकैप यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम, प्रो. जॉय सेन , आई.आई.टी. खड़गपुर, डॉ. धीरेंद्र राय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, प्रो. कर्मेषु, प्रतिष्ठित प्रोफेसर, पेट्रोलियम और ऊर्जा अध्ययन विश्वविद्यालय, देहरादून, प्रो. वी. बी. गुप्ता, उपाध्यक्ष, शिक्षा पर सलाहकार समिति (ACE), डॉ. अपूर्व नारायण, वाटरलू विश्वविद्यालय, प्रोफेसर आनंद श्रीवास्तव, कील विश्वविद्यालय, जर्मनी, डॉ. अर्श धीर, टी.ए., अध्यक्ष, ACE, प्रोफेसर पी. के. कालरा, पूर्व निदेशक, डी.ई.आई., और श्रीमती स्नेह बिजलानी, कोषाध्यक्ष, डी.ई.आई. सम्मिलित थे। रा धा/धः स्व आ मी सतसंग सभा और डी.ई.आई. के अध्यक्ष श्री गुर सरूप सूद ने सत्र की अध्यक्षता की, प्रोफेसर सी. पटवर्धन, निदेशक, डी.ई.आई. और प्रोफेसर आनंद मोहन, कुलसचिव, डी.ई.आई. ने समस्त चर्चा को समन्वित किया।

इस अवसर पर परम श्रद्धेय प्रोफेसर पी. एस. सतसंगी साहब, अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति, डी.ई.आई. की गरिमामयी उपस्थिति अत्यंत उत्साहवर्धक रही। परम आदरणीय रानी साहिबा की सौम्य उपस्थिति ने सभी लोगों को प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर अपने अमृत दृष्टि व्याख्यान में श्रद्धेय प्रोफेसर सतसंगी साहब ने विनम्रतापूर्वक कहा कि दिवाली या दीपावली हिंदू प्रकाश का उत्सव है और इसके विविध रूप अन्य भारतीय धर्मों में भी मनाए जाते हैं। यह अंधकार पर प्रकाश, बुराई पर अच्छाई और अज्ञान पर ज्ञान की आध्यात्मिक विजय का प्रतीक है। दिवाली हिंदू चंद्र–सौर महीनों अश्विन (अमंता परंपरा के अनुसार) और कार्तिक के दौरान मध्य सितंबर और मध्य नवंबर के बीच मनाई जाती है, उत्सव आम तौर पर पांच या छह दिनों तक चलता है। दयालबाग (रा धा/धः स्व आ मी सतसंग सभा का मुख्यालय, दयालबाग़, आगरा–5) और डी.ई.आई. (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) में इस दिन का विशेष महत्व है क्योंकि प्रत्येक वर्ष दिवाली के इस दिवस को नवाचार, गुणवत्ता और मूल्यांकन के रूप में मनाया जाता है।

प्रोफेसर सतसंगी साहब ने वैश्विक रैंकिंग में शीर्ष 2% वैज्ञानिकों में स्थान पाने के लिए डी.ई.आई. के प्रोफेसर वी.बी. गुप्ता, प्रोफेसर सुखदेव रॉय और प्रोफेसर डी.के. चतुर्वेदी की तात्कालिक प्रभावी उपलब्धि से भी मण्डली को प्रबुद्ध किया।

मुख्य परिसर और वैश्विक आई.सी.टी./सूचना केंद्रों से डी.ई.आई., प्रेम विद्यालय और आर.ई.आई. के कई छात्रों ने नवाचार, मूल्यों, मूल्यांकन और गुणवत्ता के मुख्य विषयों पर केंद्रित विभिन्न सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से प्रतिभागिता की ओर विशेष योगदान दिया। दिवाली उत्सव के लिए भाषण, पोस्टर–मेकिंग, कार्टूनिंग, कविता–पाठ और भक्ति–संगीत सहित कई

प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के प्रतिभाशाली विजेताओं को इस अवसर पर एक बड़े वैश्विक स्तर पर दर्शकों के सामने अपने कौशल और रचनात्मकता को प्रदर्शित करने का अवसर मिला और उन्हें पुरस्कार और विशेष उपलब्धि प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

कौमी एकता सप्ताह का आयोजन

डी.ई.आई. में सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में 25 से 31 अक्टूबर, 2023 तक की अवधि को राष्ट्रीय एकता सप्ताह के रूप में मनाया गया और विद्यार्थियों में एकता की भावना को जगाने एवं उन्हें प्रेरित करने के लिए शास्त्रीय और लोक संगीत प्रतियोगिताएं, निबंध–लेखन, पोस्टर–निर्माण और स्लोगन राइटिंग जैसी गतिविधियों का आयोजन किया। राष्ट्रीय एकता सप्ताह की गतिविधियाँ 31 अक्टूबर, 2023 को संकायों द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ ग्रहण समारोह और 'रन फॉर यूनिटी' के आयोजन के साथ समाप्त हुईं, जिसमें छात्रों, कर्मचारियों और संकाय सदस्यों ने राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को दृढ़ करने की प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

संकाय समाचार

समाज विज्ञान संकाय

छात्रोप्लब्धियाँ:

डी.ई.आई. के बी.बी.ए.–द्वितीय वर्ष के छात्रों – अमी श्रीवास्तव, मान्या सिंह, अर्नव महाजन और अर्पिता गुप्ता ने स्नूडिफाई के जीरो–बजट ग्रोथ चैलेंज 2023 में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। उनकी सहभागिता इनोवेटिव जीरो बजट गो–टू–मार्केट स्ट्रेटजी फॉर स्नूडिफाई – एन.आई.आई.टी. दिल्ली स्टूडेंट स्टार्टअप की रणनीति तैयार करने के निकटस्थ है। इस प्रतियोगिता ने बाजार अनुसंधान, उपयोगकर्ता व्यक्तित्व और बजट–सचेत रणनीतियों में उनकी अंतर्दृष्टि को अत्यंत गहन कर दिया, जिससे रणनीतिक योजना, विपणन और टीम की गतिशीलता से उनकी दक्षता बढ़ गई।

विद्यालय समाचार

छात्रोप्लब्धियाँ:

- संस्कृत प्रतिभा खोज कार्यक्रम के अन्तर्गत मंडलस्तरीय प्रतियोगिता में डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय की छात्राओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। इसका आयोजन उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा के. एम. इंस्टीट्यूट ऑफ हिंदी एंड लिंग्विस्टिक्स, डॉ. भीमराव

अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में 10 अक्टूबर, 2023 को किया गया था। डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय की छात्राओं ने विभिन्न क्षेत्रों में कई पदक जीतकर शानदार प्रदर्शन किया। संस्कृत गीत प्रतियोगिता में दृष्टि सिंह–कक्षा छह, प्रथम स्थान पर तथा संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में मुक्ति कुमारी– कक्षा सात, द्वितीय स्थान पर रहीं।

- उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ द्वारा आगरा में शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय की छात्राओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया और पुरस्कार जीते। सुश्री सुरत सखी, कक्षा X (विज्ञान) ने एकल शास्त्रीय गायन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता, कक्षा XII (विज्ञान) की सुश्री आशना सूरी ने एकल शास्त्रीय गायन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार जीता और सुश्री सी दिलासा, दसवीं कक्षा (विज्ञान) की छात्रा ने एकल तबला प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता।
- 28 अक्टूबर, 2023 को निनाद संगीत महोत्सव पं. रघुनाथ फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा हिलमैन पब्लिक स्कूल, आगरा में आयोजित किया गया जिसमें दसवीं कक्षा (विज्ञान) की सी. दिलासा ने एकल तबला प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता, जबकि दसवीं कक्षा (विज्ञान) की सुरत सखी ने एकल शास्त्रीय गायन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार जीता।

- 6 और 7 अक्टूबर, 2023 को त्यागराज स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली 'नमस्ते डॉयचलैंड 2023' जर्मन उत्सव में स्वामी नगर मॉडल स्कूल में जर्मन सीखने वाले 21 छात्रों ने भाग लिया। इसकी मेजबानी गोएथे इंस्टीट्यूट, मैक्समूलर भवन द्वारा की गई थी और इसमें दिल्ली–एन सी आर के (4000 युवाओं और प्रेरित जर्मन शिक्षार्थियों द्वारा) 140 स्कूलों ने प्रतिभागिता प्रदान की। छात्रों ने रिले रेस, बैडमिंटन, जर्मन क्विज और कई अन्य गतिविधियों का आनंद लिया। उन्होंने भारत और भूटान में जर्मन राजदूत एच. ई., शिक्षा सचिव श्री अशोक कुमार और डी.ओ.ई. के निदेशक श्री हिमांशु गुप्ता के साथ जर्मन मूल निवासी डॉ. फिलिप एकरमैन से भेंट की। छात्रों ने जर्मन भाषा के उन्नयन के लिए समर्पित समाज के कार्यों के बारे में भी सीखा।

शिक्षकोप्लब्धिः

श्रीमती आरती प्रसाद, प्रिंसिपल, मॉडल स्कूल, स्वामी नगर, नई दिल्ली को पृथ्वी अभ्युदय एसोसिएशन (पी.ए.ए.आई.) से 'विजयी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है, जो ऊना, हिमाचल प्रदेश में स्थित एक गैर–लाभकारी संगठन है, जो भारत में शिक्षकों को बढ़ावा देना एवं सुविधा के उद्देश्य के लिए समर्पित है। यह पुरस्कार श्रीमती प्रसाद को समाज के कल्याण के लिए शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु प्रदान किया गया है।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

हाल के वर्षों में ऑनलाइन शिक्षा ने तेजी से प्रगति की है और आज, संयुक्त राज्य अमेरिका, जहां यह निम्नलिखित चार चरणों के माध्यम से विकसित हुई [1], शिक्षा की इस विधा में दुनिया का नेतृत्व कर रही है:

(i) 1990 के दशक में इंटरनेट संचालित दूरस्थ शिक्षा,

(ii) लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एल एम एस) के उपयोग में वृद्धि, वर्ष 2000 और 2007 के बीच,

(iii) मैसिव ओपन ऑनलाइन पाठ्यक्रम (एम ओ ओ सी), का व्यापक विकास 2008 और 2012 के बीच, और

(iv) वर्तमान में आमने–सामने (face-to-face) की पारंपरिक शिक्षा के बहुत करीब आ रही है या उससे भी आगे निकल रही है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में ऑनलाइन बनाम आमने–सामने की शिक्षा पर हाल ही में हुए एक सर्वेक्षण (नमूना आकार (Sample size): 1500 डिग्री स्तर के छात्र) से सामने आई ऑनलाइन शिक्षा पर छात्रों की राय [2] का सारांश नीचे दिया गया है:

छात्र	ऑनलाइन आमने–सामने से बेहतर	दोनों समान	ऑनलाइन उतनी अच्छी नही है
यू जी	39%	50%	11%
पी जी	52%	38%	10%

ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में उपरोक्त छात्रों के लिए लिंग–वार वितरण नीचे दिखाया गया है:

छात्र	पुरूष	महिला
यू जी	46%	54%
पी जी	35%	65%

संयुक्त राज्य अमेरिका में छात्रों द्वारा ऑनलाइन कार्यक्रम चुनने के प्रमुख कारणों में पाठ्यक्रम का सामर्थ्य, संस्थान/कार्यक्रम की प्रतिष्ठा और कैसे एक कार्यक्रम डिग्री प्राप्त करने का सबसे तेज रास्ता प्रदान करता है, शामिल हैं।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों (मास्टर और डॉक्टरेट स्तर पर) के लिए बड़ी संख्या में छात्रों के लिए ऑनलाइन मोड पसंदीदा विकल्प है, जाहिर तौर पर उनकी परिपक्वता और अनुभव के स्तर के कारण। इसके अलावा, ऑनलाइन कार्यक्रम महिला छात्रों के बीच अधिक लोकप्रिय हैं, खासकर पी जी स्तर पर।

ऑनलाइन छात्र नामांकन सांख्यिकी [3] के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 11.2 मिलियन छात्र ऑनलाइन कक्षाएं लेते हैं। इनमें से 46% पूर्णकालिक और 22% स्नातक छात्र हैं। दिलचस्प बात यह है कि 68% ऑनलाइन छात्र कामकाजी वयस्क हैं या वापस लौटने वाले छात्र हैं – जो अपने द्वारा शुरू किए गए पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए 1 सेमेस्टर या उससे अधिक के ब्रेक (break) के बाद वापस कॉलेज जाते हैं।

भारत में ऑनलाइन शिक्षा देर से आई और इसकी शुरुआत कथित तौर पर वर्ष 2004–05 में एडुसैट सैटेलाइट के लॉन्च के साथ हुई [4]। DEI शिक्षा के ऑनलाइन मोड का उपयोग करने वाले पहले संस्थानों में से एक था, जिसके लिए इसने वितरण (delivery) के तीन तरीकों का उपयोग किया, अर्थात एडुसैट–आधारित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, पॉलीकॉम एकीकृत कॉन्फ्रेंसिंग सिस्टम और विंडोज़

मीडिया स्ट्रीमिंग। इनके माध्यम से डी.ई.आई. के कार्यक्रम समन्वयक नियमित रूप से देश और विदेश के केंद्रों में सलाहकारों और छात्रों के साथ इंटरएक्शन (interaction) करते थे।

वर्ष 2017 में, भारत सरकार ने एक ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म स्वय (Swayam: Study webs of active learning for young aspiring minds, युवा महत्वाकांक्षी दिमागों के लिए सक्रिय शिक्षण का अध्ययन वेब) की स्थापना की, जिसकी कथित तौर पर मांग में भारी उछाल देखा गया क्योंकि HEIs को कोरोना वायरस महामारी के कारण ऑनलाइन शिक्षण पर निर्भर रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। जनवरी–जुलाई 2021 के बीच 3 करोड़ पंजीकरण हुए, जिनमें से 11.3 लाख को प्रमाणपत्र प्राप्त हुए। ऐसा स्पष्ट रूप से इसलिए था क्योंकि पंजीकरण कराने वालों में से अधिकांश क्रेडिट प्राप्त करने के बजाय सीखने की कमी को पूरा कर रहे थे।

सितंबर 2020 में यू जी सी ओ डी एल/ऑनलाइन शिक्षा पर नए विनियम लेकर आया, जिसमें उच्च NAAC/NIRF स्कोर वाले HEIs के लिए यू जी सी की पूर्व मंजूरी के बिना पूर्ण ऑनलाइन कार्यक्रम शुरू करने का प्रावधान था, बशर्ते कि वे विनियमों में प्रावधानों को पूरा करते हों। DEI सहित कई HEIs इस प्रावधान के लिए योग्य हैं और परिणामस्वरूप, 31 अक्टूबर, 2022 की स्थिति, जैसा कि यू जी सी द्वारा रिपोर्ट किया गया है, इस प्रकार है [5]:

66 HEIs जिनमें शामिल हैं:

- 4 केंद्रीय विश्वविद्यालय
- 20 राज्य विश्वविद्यालय
- 12 निजी विश्वविद्यालय, और
- 30 डीम्ड–टू–बी–विश्वविद्यालय

वे 371 कार्यक्रमों की पेशकश करने के लिए अधिकृत हैं – 136 यू जी स्तर पर और 235 पी जी स्तर पर ऑनलाइन मोड में। इन 66 HEIs में ऑनलाइन शिक्षा के लिए नामांकन 2020–21 में 25,905 से बढ़कर 2021–22 में 70,023 हो गया।

ऊपर सूचीबद्ध 66 HEIs के अलावा, 86 अन्य HEIs (मान्यता प्राप्त और श्रेणी I HEIs) 20,37,676 छात्रों के नामांकन के साथ 2021–22 में 1078 कार्यक्रमों [6] की पेशकश करने के हकदार हैं। इस प्रकार, छोटी अवधि के भीतर, 2.1 मिलियन से अधिक छात्रों के कुल नामांकन के साथ भारत में ऑनलाइन शिक्षा ने अच्छी प्रगति की है।

यू जी सी के अध्यक्ष ने कहा – 'ऑनलाइन कार्यक्रम कई छात्रों को अवसर की खिड़की प्रदान करते हैं जो किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय में शारीरिक रूप से शामिल होने में सक्षम नहीं हैं); और कहा, 'जब हम लचीले ऑनलाइन नियमों के साथ राष्ट्रीय डिजिटल विश्वविद्यालय की घोषणा करेंगे तो नामांकन में और तेजी आएगी।'

अंत में, कई शोधकर्ताओं द्वारा की गई निम्नलिखित दो उल्लेखनीय टिप्पणियों पर प्रकाश डाला जा सकता है:

(i) ऑनलाइन वर्चुअल कक्षा में interaction की आवश्यकता जरूरी है और इसलिए शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण बनी रहेगी, और

(ii) आमने–सामने (face-to-face) की पारम्परिक शिक्षा के विश्वविद्यालय अपनी भूमिका निभाते रहेंगे और उन्हें अपनी शिक्षा पद्धति को नहीं छोड़ना होगा।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

संदर्भ:

[1] https://www.tandfonline.com/doi/epdf/10.1080/1097198X.2018.1542262?needAccess=true
[2] https://research.com/education/online-education-statistics
[3] https://wordsrated.com/online-student-enrollment-statistics/
[4] https://www.isro.gov.in/EDUSAT.html
[5] https://timesofindia.indiatimes.com/education/online-schooling/students-enrolment-in-online-education-programmes-increased-170-between-2021-and-2022-ugc-chairman/articleshow/95197476.cms
[6] https://twitter.com/mamidala90/status/1585842984859246592/photo/1

सूचना केन्द्रों से समाचार

आई सी जमशेदपुर की टीम ने टाटा कमिंस द्वारा आयोजित विनिर्माण (manufacturing) दिवस प्रतियोगिता में भाग लिया और शीर्ष सम्मान अर्जित किया

अक्टूबर 2023 में, 11 और 13 अक्टूबर, 2023 को टाटा कमिंस जमशेदपुर प्लांट में विनिर्माण दिवस 2023 का आयोजन किया गया था। (DEI IC) जमशेदपुर के ऑटोमोबाइल इंजीनियरों की एक टीम ने पर्यावरण नवाचार और प्रतिबद्धता का एक उल्लेखनीय उदाहरण स्थापित किया।

ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग में विशेषज्ञता वाले दूसरे वर्ष के छात्रों से बनी इस प्रतिभाशाली टीम ने एक कार्यक्रम में भाग लिया, जिसका केंद्रीय विषय ''पर्यावरण संरक्षण'' था। उनकी प्रस्तुति टिकाऊ जीवन के लिए एक अभिनव, समग्र दृष्टिकोण को प्रदर्शित करने वाली ''कृषि पारिस्थितिकी और सटीक खेती'' की अवधारणाओं पर केंद्रित थी। जिस चीज ने उनके प्रयास को वास्तव में विशिष्ट बनाया वह एक आदर्श गाँव में इस दृष्टिकोण का व्यावहारिक प्रदर्शन था।

मॉडल गांव में एक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट दिखाया गया है, जो अपशिष्ट जल के प्रभावी प्रबंधन पर जोर देता है, जो पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। वर्षा जल संचयन तकनीकों को भी शामिल किया गया, जिससे साल भर पानी की आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। जल पुनर्चक्रण और सौर खेती ने संसाधनों के सतत उपयोग को प्रदर्शित किया, जबकि कृषि खाद के लिए अपशिष्ट पुनर्चक्रण ने एक चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया। मॉडल की 'स्मार्ट डेयरी' ने संचालन को अनुकूलित करने, दक्षता बढ़ाने और संसाधन खपत को कम करने के लिए प्रौद्योगिकी को एकीकृत किया है।

उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण का परिणाम इस आयोजन में ''प्रथम रनर अप'' का सुयोग्य खिताब था। यह उपलब्धि न केवल टीम की नवोन्वेषी भावना को दर्शाती है, बल्कि एक प्रेरक उदाहरण के रूप में भी काम करती है कि कैसे व्यावहारिक समाधान पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण अंतर ला सकते हैं। डी.ई.आई. आई सी जमशेदपुर टीम की सफलता शिक्षा और उससे परे नवाचार और स्थिरता को बढ़ावा देने के महत्व की याद दिलाती है, जो एक हरित, पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक भविष्य की झलक पेश करती है।

आई सी, जमशेदपुरः भविष्य के इंजीनियरों ने खुद को टाटा कमिंस वर्ल्ड में विसर्जित कर दिया

15 अक्टूबर, 2023 को, आई सी जमशेदपुर में ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा कर रहे उत्साही छात्रों के एक समूह को ऑटोमोबाइल उद्योग के केंद्र में जाकर एक ज्ञानवर्धक अनुभव प्राप्त हुआ। छात्र टाटा कमिंस की यात्रा पर निकले, जहां उन्हें इंजन असेंबली से लेकर परीक्षण और पेंटिंग तक पूरी विनिर्माण प्रक्रिया का गहन दौरा कराया गया। शैक्षिक भ्रमण एक सीखने का अवसर और एक आकर्षक अनुभव था, जिसमें विभिन्न शिक्षक और TATA Cummins अधिकारी छात्रों को उनकी यात्रा के दौरान मार्गदर्शन और सलाह देने के लिए मौजूद थे।

दिन की शुरुआत टाटा कमिंस के प्रमुख अधिकारियों द्वारा एक व्यावहारिक परिचय के साथ हुई। उन्होंने इंजन निर्माण जैसे जटिल

वातावरण में औद्योगिक सुरक्षा के सर्वोपरि महत्व पर जोर दिया। छात्रों को सुरक्षा प्रोटोकॉल, विनियमों और सख्त सुरक्षा उपायों का पालन करने के महत्व के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने पूरी इंजन असेंबली देखी।

प्रक्रिया, कच्चे घटकों से शुरू होती है, जिन्हें सावधानीपूर्वक विभिन्न टाटा वाहनों को चलाने वाले पावरहाउस में इकट्ठा किया जाता है। छात्रों को उन कठोर परीक्षण प्रक्रियाओं की भी झलक मिली, जिनसे प्रत्येक इंजन बाजार में आने से पहले गुजरता है और तकनीकी प्रगति और औद्योगिक सुरक्षा प्रथाओं की भी झलक मिली, जो ऑटोमोबाइल उद्योग की रीढ़ हैं।

DEI केंद्रों पर नवाचार, गुणवत्ता और मूल्यांकन दिवस समारोह

DEI के पूर्व छात्रों और शिकागो सतसंग शाखा के सदस्यों ने संयुक्त राज्य अमेरिका में कुछ अन्य सतसंग शाखाओं और केंद्रों के साथ संयुक्त रूप से 11 नवंबर, 2023 को 'IQV (नवाचार, गुणवत्ता और मूल्यांकन) दिवस 2023 मनाया। समारोह की शुरुआत ओहायो क्षेत्र के सदस्यों द्वारा संस्कृत में संस्थान प्रार्थना पाठ से हुई। इसके बाद बच्चों की प्रस्तुति हुई जिसमें प्रत्येक बच्चे ने एक रंगीन तख्ती बनाई और उन मूल्यों और गुणों के बारे में बताया जो उसने विकसित किए हैं। इसके बाद, डेट्रॉय्ट क्षेत्र के कुछ सदस्यों ने शब्द पाठ, उसके बाद इंडियानापोलिस सेंटर से पाठ और शिकागो सेंटर के सदस्यों द्वारा कव्वाली का पाठ किया। यह समारोह मिनियापोलिस, मिनेसोटा में भाइयों और बहनों द्वारा प्रार्थना पाठ के साथ संपन्न हुआ।

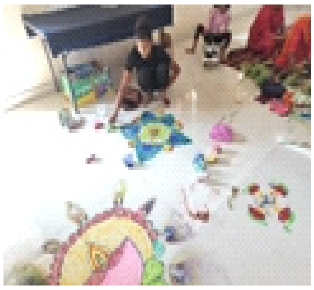

डी.ई.आई. प्रशिक्षण केंद्र गादीरास (सुकमा) में नवाचार, गुणवत्ता एवं मूल्यांकन दिवस 2023' बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इंस्पेक्टर जोगिंदर सिंह और श्रीमती सितारा पासवान थाना प्रभारी निरीक्षक अवनीश पासवान की पत्नी ने अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम की शुरूआत विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई। विद्यार्थियों ने रंगोली, चार्ट और फूल बनाए। छात्राओं द्वारा मेहंदी प्रतियोगिता के साथ–साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इसके बाद इंस्पेक्टर जोगिंदर सिंह, श्रीमती सितारा पासवान, संरक्षक भूपिंदर जीत और केंद्र प्रभारी श्री विजंदर कुमार द्वारा प्रेरक भाषण दिये गये। अंत में केंद्र प्रभारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा सभी को मिठाइयाँ वितरित की गईं।

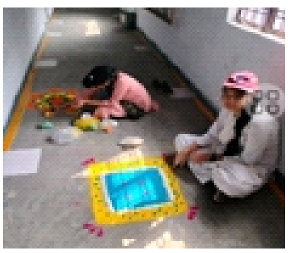

भोपाल केंद्र में, समग्र जीवन जीने के लिए नवाचार, गुणों और मूल्यों के महत्व से संबंधित संदेशों के साथ पोस्टर–मेकिंग और रंगोली–मेकिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन करके इस अवसर का जश्न मनाया गया।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

जब मेजर येट्स–ब्राउन ने 1936 में प्रकाशित अपनी पुस्तक, ''लांसर एट लार्ज'' में, दयालबाग़ को 'कामकाजी रहस्यवादियों की एक कॉलोनी' के रूप में संदर्भित किया, तो वह शायद ही इस अद्वितीय, जीवंत, बहुआयामी, तकनीकी रूप से मजबूत, अत्यधिक मेहनती समुदाय की कल्पना कर सके जो आज के दिन वास्तव में 'दयालु का बगीचा' है। दयालबाग सिर्फ एक कॉलोनी या टाउनशिप का नाम नहीं है, बल्कि यह जीवन के एक अनूठे तरीके के साथ–साथ परोपकार और दया की सर्वज्ञ मार्गदर्शक भावना का पर्याय है, जो इसे बनाए रखता है। सच्चे शिक्षण संगठनों पर प्रो. नतासा रुपसिक का काम, जिसका शीर्षक 'सच्चा शिक्षण संगठन–आध्यात्मिकता के लिए समर्पित लोगों का संगठन' है, सिस्टमिक प्रैक्टिस एंड एक्शन रिसर्च (स्प्रिंगर नेचर, 2023, पृष्ठ 1–22) में प्रकाशित हुआ जिसमें उल्लेख किया गया है 'एक प्रामाणिक शिक्षण संगठन के रूप में दयालबाग़', जब दयालबाग पर लागू किया जाता है, तो वास्तविकता में तब्दील हो जाता है। सुपर ह्यूमनकाइंड योजना का हिस्सा रहे बच्चों के माता–पिता द्वारा दी गई पाठक प्रतिक्रिया यह साबित करती है कि प्राकृतिक वातावरण में, परम पिता की अनंत कृपा, मार्गदर्शन और दया के साथ, बच्चे आसानी से अखंडता, करुणा, अनुशासन और सेवा के मूल मानवीय मूल्यों के साथ फिर से जुड़ सकते हैं।

हम aadeisnewsletter@gmail.com पर आपकी टिप्पणियों और योगदान की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

दयालबाग़ एक प्रामाणिक शिक्षण संगठन के रूप में

सुमिता श्रीवास्तव

एम बी एम (बैच 1997–1999), बी.ए. अर्थशास्त्र (ऑनर्स) (बैच 1994–1997), डी.ई.आई.; पी एच.डी (सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा); वर्तमान में, प्रोफेसर, प्रबंधन विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थान

एक शिक्षण संगठन की अवधारणा, जिसे पहली बार 1990 में पीटर सेंगे द्वारा प्रस्तुत किया गया था, एक ऐसे वातावरण की कल्पना करती है जहां व्यक्ति लक्ष्यों को प्राप्त करने, नवीन सोच को बढ़ावा देने और सामूहिक रूप से साझा आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने की अपनी क्षमता को लगातार बढ़ाते हैं। जबकि आलोचकों ने सेंगे की आदर्शवादी दृष्टि की व्यावहारिकता पर सवाल उठाया है, रुपसिक (2023) ने वास्तविक शिक्षण संगठनों में आध्यात्मिक अभ्यास और विकास की भूमिका को रेखांकित करते हुए, आध्यात्मिक लेंस के माध्यम से इन विचारों की खोज करने का प्रस्ताव दिया है। हालाँकि रुपसिक को आध्यात्मिकता–आधारित शिक्षण संगठनों के लिए अनुभवजन्य परीक्षण की कमी स्वीकृत है, लेकिन सेंगे और रुपसिक द्वारा व्यक्त किए गए सिद्धांत दयालबाग़ में देखी गई प्रथाओं के साथ उल्लेखनीय रूप से मेल खाते हैं। एक समुदाय जिसे दो शताब्दियों से अधिक समय से निर्बाध आध्यात्मिक नेतृत्व का आशीर्वाद प्राप्त है। संतों के प्राच्य धर्म में निहित एक आध्यात्मिक समुदाय होने के बावजूद, दयालबाग़ एक शिक्षण संगठन की सभी मूलभूत विशेषताओं का प्रतीक है, जो विश्व स्तर पर एक लाख से अधिक की पर्याप्त सदस्यता के साथ संचालित होता है, जो संरचना, पदानुक्रम और समन्वित प्रयासों जैसे संगठनात्मक गुणों का उदाहरण देता है।

एक सदी से भी अधिक समय से एक आध्यात्मिक संगठन के रूप में दयालबाग़ का अस्तित्व एक शिक्षण संगठन की यूटोपियन या रोमांटिक (Adžić 2018) की अवधारणा को महत्वपूर्ण रूप से चुनौती देता है। समुदाय एक ठोस और स्थायी अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करता है कि कैसे एक संगठनात्मक मूल में आध्यात्मिकता सीखने के विषयों को अपनाने की सुविधा प्रदान करती है, जिससे एक शिक्षण संगठन की अवधारणा एक व्यावहारिक और दीर्घकालिक वास्तविकता बन जाती है। रुपसिक (2023) ने स्पष्ट किया है कि कैसे आध्यात्मिकता को मूल में रखने वाले संगठन सच्चे शिक्षण संगठन बन सकते हैं, जैसा कि सेंगे ने प्रस्तावित किया था, और दयालबाग़ समुदाय इन विचारों की गवाही देता है। रुपसिक ने एक शिक्षण संगठन की चार महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन किया है। इनमें व्यक्तिगत निपुणता, मानसिक मॉडल, टीम लर्निंग, सिस्टम सोच और साझा दृष्टि के अनुशासन शामिल हैं। ये विशेषताएं

अस्तित्व के मौलिक दर्शन के साथ निकटता से मेल खाती हैं। दयालबाग़ ने लेखक को उन पर विचार–विमर्श करने के लिए प्रेरित किया। व्यक्तिगत निपुणता का अनुशासन दयालबाग़ शैक्षिक संस्थान के मिशन उद्देश्यों में प्रतिबिंबित होता है। संस्थान की नींव 1917 में दयालबाग के आध्यात्मिक समुदाय के पांचवें श्रद्धेय नेता द्वारा समाज के विकास के मूल में शिक्षा को रखने की प्रतिबद्धता के साथ रखी गई थी। संस्थान 'अपरा विद्या' और 'परा विद्या' दोनों में शिक्षा प्रदान करता है। पहले में भौतिक इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान शामिल होना और बाद वाला गूढ़ ध्यान या अनुसंधान प्रथाओं के माध्यम से प्राप्त पारलौकिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। इसका उद्देश्य शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और नैतिक एकीकरण के माध्यम से एक संपूर्ण व्यक्ति का विकास करना है। इसके अलावा, जनवरी 2017 में शुरू की गई एक अनूठी 'दयालबाग संतसु (स्थायी) विकासवादी योजना' का लक्ष्य बहुत कम उम्र से ही व्यक्तिगत महारत हासिल करना है, जिसमें शिशुओं और बारह साल तक के बच्चों को गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला में शामिल किया जाता है, जिससे शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास होता है। यह हस्तक्षेप शरीर, मन और आत्मा के संतुलित विकास में निहित है।

मानसिक मॉडलों का अनुशासन, जो वास्तविकता की समझ को आकार देने वाली गहरी जड़ें जमाती धारणाओं का प्रतिनिधित्व करता है, दयालबाग़ समुदाय के "ईश्वर के पितृत्व और मनुष्य के भाईचारे" की भावना के विश्वास में सन्निहित है। दयालबाग़ का उद्देश्य बौद्धिक शक्ति, भावनात्मक परिपक्वता, उच्च नैतिक चरित्र, सच्चाई, सरल जीवन और वैज्ञानिक स्वभाव वाले व्यक्तियों का पोषण करना है।

सिस्टम सोच दयालबाग़ समुदाय के अस्तित्व और शिक्षा नीति का आधार है, वर्तमान आठवें श्रद्धेय आध्यात्मिक नेता भारत में सिस्टम आंदोलन के जनक हैं। दयालबाग़ में लचीली और नवीन शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों में यथार्थवादी योजनाओं के माध्यम से अपना भविष्य बनाने के लिए व्यावहारिकता और आत्मविश्वास पैदा करती है।

डी.ई.आई. के चेतना अध्ययन केंद्र में चेतना और अति–पारलौकिक ध्यान का वैज्ञानिक अध्ययन, दयालबाग़ समुदाय के भीतर 150 वर्षों के अनुभवात्मक ज्ञान से प्राप्त, चेतना की घटनाओं और ध्यान प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए एक जीवित प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है। यह अनुशासन महत्वपूर्ण होते हुए भी अन्यत्र शिक्षा का औपचारिक हिस्सा नहीं बन पाया है।

यह एक शिक्षण संगठन के रूप में दयालबाग़ समुदाय (डी.ई.आई. सहित) की यात्रा पर केवल एक आंशिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। समग्र तस्वीर प्रस्तुत करने के लिए कई अन्य समानांतर सर्वोत्तम प्रथाओं का व्यापक मूल्यांकन आवश्यक है। हालाँकि, दयालबाग़, जो अपने आप में एक स्वप्नलोक है, एक सतत यात्रा पर चलने वाला एक शिक्षण संगठन है, जो पारलौकिक नेतृत्व से संपन्न है – कर्तव्य, सुंदरता, विनम्रता, अनुशासन, संयम, साहस, वफादारी, ईमानदारी और धैर्य के मूल्यों पर आधारित एक समुदाय। एक शिक्षण संगठन के रूप में दयालबाग का जीवंत उदाहरण शिक्षण संगठनों के गैर–वास्तविक अस्तित्व के बारे में कई मान्यताओं का खंडन करता है (सोलोमन, 1994; हैमंड और विले, 1994; पावा, 2003; पेडलर और बर्गोयन, 2017) और सेंगे और रुपसिक की मान्यताओं को पुष्ट करता है।

दयालबाग़ से भली–भांति परिचित पाठकों को यह अभिव्यक्ति दोहराव वाली लग सकती है। हालाँकि, यह देखना दिलचस्प है कि अन्य लोग दयालबाग़ की विशेषताओं को एक शिक्षण संगठन के रूप में उसकी शाश्वत अस्तित्व की यात्रा पर कैसे देखते हैं। यह दर्शाता है कि विचारधाराएँ वास्तव में वास्तविक अस्तित्व को आकार देती हैं, और दयालबाग़ इसका प्रमाण है।

अंतर्दृष्टि के स्रोतः

1. ट्रू लर्निंग ऑर्गेनाइजेशन पर प्रो. नतासा रुपसिक का काम, जिसका शीर्षक 'ट्रू लर्निंग ऑर्गनाइजेशन–आध्यात्मिकता के लिए समर्पित लोगों का संगठन' है, सिस्टमिक प्रैक्टिस एंड एक्शन रिसर्च (स्प्रिंगर नेचर, 2023, पृष्ठ 1–22) में सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सामग्रियों के साथ दयालबाग़ समुदाय और डी.ई.आई. पर प्रकाशित हुआ।
2. इस लेख में उद्धृत अन्य संदर्भ अनुरोध पर उपलब्ध हैं।

'पाठक की प्रतिक्रिया' स्तम्भ

सितंबर 2023 अंक में छपे लेख 'सुपर ह्यूमन के माता–पिता के रूप में हमारी रोमांचक यात्रा' पर निम्नलिखित प्रतिक्रियाएं पाकर हमें खुशी हुई है। हमारे पाठकों से प्राप्त प्रतिक्रिया हमेशा उत्साहवर्धक रही है, लेकिन दयालबाग़ संत सु (परमैन) विकासवादी योजना का हिस्सा रहे बच्चों के माता–पिता की उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया विशेष रूप से मूल्यवान है।

प्रतिक्रिया 1

यह लेख मुझ पर गहरा प्रभाव डालता है क्योंकि मेरी बेटी भी दयालबाग़ संत सु (परमैन) विकासवादी योजना का हिस्सा है। हमारे मन में भी इसी तरह के डर थे लेकिन उनकी कृपा के लिए धन्यवाद। बच्चे सांस्कृतिक वस्तुओं सहित दैनिक गतिविधियों में शामिल होते हैं, जो उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं और उन्हें बेहतर करने के लिए प्रेरित करते हैं। जब से बच्चे कई गतिविधियों में भाग ले रहे हैं तब से हमने आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति में स्पष्ट वृद्धि देखी है। सप्ताहांत में विभिन्न कार्यक्रमों से, चाहे वह संस्कृत सीखना हो या शब्द गायन, बच्चों में कई मायनों में सुधार हो रहा है। अभी हाल ही में, हमारी शाखा के बच्चों ने 'गुणवत्ता, नवाचार और मूल्यांकन दिवस' पर मूल्यों के बारे में एक प्रभावशाली प्रस्तुति तैयार की। बच्चों को रचनात्मक और सकारात्मक गतिविधियों में शामिल करना वास्तव में एक आशीर्वाद है, जो उन्हें शारीरिक रूप से स्वस्थ और सक्रिय रहने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें परमपिता के मार्गदर्शन, अनुग्रह और दया का आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है।

अरुणा शर्मा, पूर्व, परामर्श कला निदेशक, पेटीएम; वर्तमान में, फ्रीलांस क्रिएटिव डायरेक्टर
(बहार शर्मा की माँ, कक्षा **VI**, स्वामी नगर मॉडल स्कूल, स्वामी नगर, नई दिल्ली)

प्रतिक्रिया 2

लेख संत सु (परमैन) चरण 4 में मेरी 10 वर्षीय बेटी के साथ समान यादें और अनुभव उत्पन्न करता है। हमें उस वातावरण का आशीर्वाद मिला है जिसने उसके समग्र विकास में मदद की है, क्योंकि वह आसानी से प्री–टीन चरण में स्थानांतरित हो गई है। पी टी, सांस्कृतिक और खेत में भागीदारी मजबूत मूल्यों को विकसित करती है और मानसिक और शारीरिक दोनों तरह के समग्र विकास में मदद करती है। इस योजना से उन्हें सतसंग गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेने में मदद मिली है। हम नई चुनौतियों को स्वीकार करने और पर्यावरण में बदलावों को अपनाने में उसके आत्मविश्वास में वृद्धि के साथ उसके व्यक्तित्व में एक स्पष्ट बदलाव देखते हैं। हमने एक और उल्लेखनीय परिवर्तन के रूप में सर्वोच्च सत्ता के चरण कमलों में उनके मजबूत विश्वास को देखा है। कठिन परिस्थितियों में खुद को शांत करने के लिए वह 5 चक्रों पर जप करती हैं। इसके परिणामस्वरूप स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का विकास हुआ है।

पायल सिंह, एम बी ए (2005), एम फिल, पी एच.डी स्कॉलर (डी.ई.आई.)
वर्तमान में, कोषाध्यक्ष, नोएडा महिला एसोसिएशन, ए ओ ए कार्यकारी सदस्य – ग्रेट वैल्यू शरणम, नोएडा (रजा सिंह की माँ, कक्षा 5, जूनियर हेड गर्ल, दिल्ली पब्लिक स्कूल, नोएडा)

प्रतिक्रिया 3

2 साल की उम्र में हमारा बच्चा महामारी के कारण अलग–थलग हो गया था, जिससे हमारे मन में डर पैदा हो गया था। हालाँकि, जब उन्होंने वीडियो कैस्केड में दैनिक स्वास्थ्य देखभाल मास पीटी और सांस्कृतिक गतिविधि में भाग लेना शुरू किया तो हमने उनके सामाजिक कौशल में महत्वपूर्ण बदलाव देखे। उनके बौद्धिक और शारीरिक विकास में भी उल्लेखनीय प्रगति देखी गई है। वह अब 5 साल का है और उत्साह से सभी गतिविधियों में शामिल होता है। हम इस योजना का हिस्सा बनकर वास्तव में भाग्यशाली हैं।

कामिनी शर्मा (अनहद सत्संगी की माँ, कक्षा एलकेजी, यूरो किड्स, नोएडा) पूर्व छात्र

पूर्व छात्रों की बाइट्स...

"दयालबाग़ में शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ है..."

DEI निश्चित रूप से आपको अपना सर्वश्रेष्ठ संस्करण बनाता है। सांस्कृतिक और कृषि गतिविधियों की पृष्ठभूमि में स्थापित डीईआई ढांचे के भीतर दैनिक मूल्यांकन का गतिशील मिश्रण आपको मानसिक रूप से मजबूत व्यक्ति बनाता है। अनुशासन ही आपको भीड़ से अलग खड़ा करता है।

आधार भाटिया, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में बी.टेक, (बैच 2021),
वर्तमान में, सॉफ्टवेयर इंजीनियर कीसाइट टेक्नोलॉजीज

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई
संरक्षक: प्रो. सी. पटवर्धन
मुख्य संपादक: प्रो. जे.के. वर्मा
संपादक: डॉ. सोना दीक्षित, डॉ. सोनल सिंह, डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी, डॉ. बानी दयाल धीर
सदस्यों: डॉ. चारु स्वामी, डॉ. नेहा जैन, डॉ. सौम्या सिन्हा, श्री आर.आर. सिंह, प्रो. प्रवीण सक्सेना, प्रो. वी. स्वामी दास, डॉ. रोहित राजवंशी, डॉ. भावना जौहरी
सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान
अनुवादक: डॉ. नमस्या, डॉ. निशिथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)
संरक्षक: प्रो. सी. पटवर्धन, प्रो. वी.बी. गुप्ता
संपादकीय सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान, प्रो. जे.के. वर्मा
संपादकीय मंडल: डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मीना पायदा, डॉ. लौलीन मल्होत्रा, डॉ. बानी दयाल धीर, श्री राकेश मेहता
अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni (AADEIs & AAFDEI)
संपादक: प्रो. गुर प्यारी जंडियाल
संपादकीय समिति: डॉ. सरन कुमार सतसंगी, प्रो. साहब दास, डॉ. बानी दयाल धीर, श्रीमती शिफ़ाली सत्संगी, श्रीमती अरुणा शर्मा, डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. गुरप्यारी भटनागर, डॉ. वसंत वुप्पुलुरी
अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालयः पहली मंजिल, 63, नेहरू नगर, आगरा –282002
पंजीकृत कार्यालयः 108, साउथ एक्स प्लाजा –1, साउथ एक्सटेंशन पार्ट II, नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस